ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

पी. एच.डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

विषय : राजनीति विज्ञान

समाजिक विज्ञान संकाय

अप्रैल , 2024

– शोध शीर्षक –

Head
University Department of Political Science
Mithila University, Darbhanga

भारत-आसियान संबंधों में भारत की "लुक ईस्ट पॉलिसी" से "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" तक का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पर्यवेक्षक
डॉ. आशीष कुमार बरियार
सी . एम . कॉलेज दरभंगा ।
Mobile no : +919155448370

शोधार्थी
कंचन कुमारी
PAT– 2021-22
Enrollment – 22160077

शोध का शीर्षक (Title of the Research) –

भारत - आसियान संबंधों में भारत की "लुक ईस्ट पॉलिसी" से "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" तक का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध समस्या का प्राक्कथन (Statement of the research problem) –

भारत एक उभरती हुई वैश्विक आर्थिक एवं सैन्य शक्ति है। भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तथा चौथी सैन्य शक्ति वाला देश है। इस संदर्भ में भारत और आसियान के बीच व्यापार और सैन्य सहयोग के विस्तार की आवश्यकता है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती हुई आक्रमकता पर विराम लगाने तथा इस क्षेत्र में शांति एवं व्यापार में वृद्धि के लिए भारत का आसियान के साथ अच्छे संबंध आवश्यक है। अतः भारत और आसियान के बीच संबंधो की समीक्षा और संभावनाओं का अध्ययन समीचीन है। यह शोध निम्न. प्रश्नों की जांच हेतु अभिप्रेरित है –

- भारत – आसियान मिलकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र मे चीन की विस्तारवादी नीति को कहां तक प्रतिसंतुलित कर पाया है ?
- भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" किस प्रकार "लुक ईस्ट पॉलिसी" का एक नया आयाम है?
- पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा के लिए आसियान की क्या भूमिका है?
- क्या भारत – आसियान संबंधों को बढ़ाकर राउंड ट्रिपिंग के माध्यम से चीन की वस्तु का भारत में प्रवेश पर नियंत्रण लग सकता है ?
- भारत के लिए आसियान का क्या महत्व है?

परिचय (Introduction) –

'आसियान' दक्षिण – पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का एक क्षेत्रीय समूह है। इसका पूरा नाम 'दक्षिण – पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संघ' (Association of South East Asian Nations -ASEAN) है। इसकी स्थापना 8 अगस्त 1967 में दक्षिण- पूर्वी एशिया के 5 देश (इंडोनेशिया,मलेशिया, फिलिपींस,सिंगापुर और थाईलैंड) ने मिलकर क्षेत्रीय सहयोग के उद्देश्य से थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक संधि पत्र पर हस्ताक्षर कर इसके निर्माण की औपचारिक घोषणा की। जिसमे आज दक्षिण पूर्व एशिया के 10 देश शामिल है–

Kanchan Kumari
9/4/24

इंडोनेशिया,मलेशिया, फिलिपींस ,सिंगापुर, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम तथा ब्रुनेई।

भारत के लिए आसियान का महत्त्व –

यह क्षेत्र सामरिक और भौगोलिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। यह हिंद महासागर से प्रशांत महासागर को मिलाने वाले समुद्री मार्ग पर स्थित है और एशिया व ऑस्ट्रेलिया के मध्य तक प्राकृतिक पुल सा कार्य करता है। आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत समृद्ध है। यहाँ चावल, टीन, रबड़, पेट्रोल आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आसियान सामूहिक रूप से एशिया की तीसरी और विश्व की सातवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है। अतः भारत के लिए यह क्षेत्र सामरिक तथा व्यापारिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इसलिए भारत को आसियान के साथ संबंधों को बढ़ाने पर कार्यरत रहना चाहिए।

भारत की "लुक ईस्ट पॉलिसी" –

भारत और आसियान के मध्य बेहतर संबंधों की शुरुआत उदारीकरण के दशक में हुई,जब 1992 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के समय लुक ईस्ट पॉलिसी (पूर्व की ओर देखो नीति) की घोषणा की। इसके माध्यम से आर्थिक एकीकरण पर बल दिया। तब से निरंतर आसियान के साथ भारत के संबंधों में मजबूती आई है।

1992 में ही भारत आसियान का क्षेत्रीय वार्ता भागीदार बना। इससे दोनों के बीच पर्यटन, विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग हुआ। 1995 में आसियान ने भारत को पूर्ण वार्ता भागीदार का दर्जा दिया। एक साल बाद 1996 में भारत को आसियान क्षेत्रीय मंच में भी शामिल कर लिया। दोनों के बीच सरकार से सरकार के बीच संपर्क बढ़ाने (G to G) और लोगों के बीच सम्पर्क बढ़ाने पर बल दिया जाने लगा। जैसे, 2000ई. में 'मेंकांग-गंगा सहयोग' की शुरुआत की गई।

2002 ई.से भारत- आसियान शिखर वार्ता आयोजित होने लगे। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 7 अक्टूबर 2003 को आसियान मंच से ' इस सदी को एशिया के वर्चस्व वाली सदी' बताया।

वर्ष 2009 में भारत- आसियान के बीच मुक्त व्यापार समझौता (FTA) हुआ, जो वर्ष 2010 से प्रभावी हुआ। आज आसियान भारत का चौथा बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। इस तरह लुक ईस्ट नीति के पश्चात भारत आसियान संबंधों में निरंतर मजबूती देखने को मिली है।

Kanchan Kumari
9/4/24

9/4/24

"लुक ईस्ट" से "एक्ट ईस्ट" की ओर –

25 अगस्त 2014 में भारत के विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने वियतनाम के तीन दिवसीय यात्रा शुरू करते हुए कहा कि लुक ईस्ट पॉलिसी अब पर्याप्त नहीं है और हमें अब एक्ट ईस्ट पॉलिसी की जरूरत है, क्योंकि लुक ईस्ट नीति को जब शुरू किया गया था तो इसे एक आर्थिक पहल के तौर पर देखा गया था ,लेकिन अब इस नीति ने एक राजनीतिक, रणनीतिक एवम सांस्कृतिक अहमियत भी हासिल कर ली है।इसी संदर्भ में संबंधों को नवीनता और नई गतिशीलता देने के लिए एक्ट ईस्ट नीति को अपनाया गया।

भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" –

2014 में भारत के विदेश मंत्री की वियतनाम यात्रा पर लुक ईस्ट पॉलिसी के स्थान पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी की घोषणा कर लुक ईस्ट नीति को एक नया आयाम प्रदान किया गया। एक्ट ईस्ट पॉलिसी का मकसद एशिया - प्रशांत क्षेत्र में मौजूद सभी देशों के बीच सहभागिता को बढ़ावा देना है। इसके आर्थिक, सामरिक तथा सांस्कृतिक आयाम भी हैं। भारत सरकार 3 ' C' - कॉमर्स, कल्चर, कनेक्टिविटी के द्वारा इन देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूती प्रदान कर रही है।

2018 में भारत आसियान वार्ता संबंधों की 25वीं वर्षगाँठ मनाई गई। जिसका उद्देश्य- 'साझा मूल्य और सहयोग' को बढ़ावा देना है। इसमें दिल्ली घोषणापत्र को अपनाते हुए भारत आसियान रणनीतिक साझेदारी और समुद्री क्षेत्र में सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया। 2025 तक 200 अरब डॉलर का व्यापारिक संबंध बनाने पर दोनों सहमत हुए। इस तरह भारत आसियान संबंधों को बढ़ाने पर निरन्तर बल दिया जा रहा है।

क्षेत्रीय सहयोगी संगठनों ने बिम्सटेक (बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन) का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि यह न केवल दक्षिण एशिया के बीच संपर्क बनाता है, बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भी संपर्क जोड़ता है। भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेदों के कारण दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) महत्वहीन हो जाने के कारण भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ जुड़ने हेतु बिम्स्टेक एक नया मंच प्रदान करता है । इसमें दक्षिण एशिया से पांच देशों के साथ - साथ दक्षिण पूर्व एशिया के भी 2 देश,थाईलैंड और म्यांमार शामिल है जो कि आसियान के भी सदस्य हैं । अतः इस मंच के माध्यम से भी भारत और आसियान संबंधों में निकटता आएगी। इस प्रकार भारत आसियान संबंधों को बढ़ाने में इस मंच की महत्वपूर्ण भूमिका है।

Kanchan Kumari
9/4/24

[signature] 9/4/24

3

पूर्व अध्यनों की समीक्षा(Review of literature) –

राजनीति विज्ञान विषय के अंतर्गत क्षेत्रीय सहयोग संगठन और आसियान जैसे विषयों पर विभिन्न विद्वानों ने काम किया है जैसे -

- एम. मगिलवागनम ने अपनी पुस्तक, "आसियान एंड इंडिया.- आसिया ने रिलेशन नेविगेटिंग शिफ्टिंग जियोपॉलिटिक्स"(2023) में समकालीन परिप्रेक्ष्य से भारत आसियान संबंधों के लगभग 30 वर्षों का विश्लेषण किया है।
- डॉक्टर डी श्रीनिवासन चारी और डॉ राधा रघुरामपत्रुणी ने अपनी पुस्तक, "इंडियाज़ ट्रेड विथ द आसियान- ए स्टडी ऑन ट्रेंड्स ,डिटरमिनेंट्स एंड ऑपर्च्युनिटी" (2022) में आसियान के साथ भारत का व्यापार - रुझान निर्धारकों और अवसरों का अध्ययन करती है।
- गिरीश चंद्र पांडे ने अपनी पुस्तक, "भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी" (2022) में भारत की लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट की ओर बढ़ते कदमों एवं उपलब्धियों का उल्लेख किया है।
- डॉ बीएल फड़िया तथा डॉ कुलदीप फड़िया अपनी पुस्तक, "अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक" (2020) में भारत आसियान संबंधों के आधार पर भारत, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा में भारत की उम्मीदवारी, राष्ट्रमंडल, असैनिक परमाणु सहयोग आदि जैसे मुद्दों पर भारत के लिए इस क्षेत्र के देशों के समर्थन प्राप्त करने में सफल होने की बात की है।
- सुधीर सिंह ने अपनी पुस्तक, "लुक ईस्ट टू एक्ट ईस्ट ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया- आसियान रिलेशन इन मोदी एरा" (2020) में बताया है कि भारत- प्रशांत के व्यापक संदर्भ में सुरक्षा वास्तुकला की बढ़ती रूपरेखा के कारण लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट की ओर आंदोलन आवश्यक हो गया था। मोदी सरकार एक्ट ईस्ट पॉलिसी को मजबूत करने के लिए बाध्य है क्योंकि यह भारत के राष्ट्रीय हितों को पूरा करती है।
- डॉक्टर तृप्ति शर्मा ने अपनी पुस्तक, "इंडिया आसियान रिलेशन" (2018) में भारत आसियान संबंधों की शुरुआत से लेकर एक्ट ईस्ट तक के सफरो का सविस्तार चर्चा किया। दोनों के बीच राजनीतिक आर्थिक और रणनीतिक संबंधी तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- विश्वनाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक, "एशिया का भौगोलिक स्वरूप" (2012) में बताया है कि भारत के पास अच्छे साधन और तकनीकी क्षमता होने के बावजूद भारत का व्यापार बहुत ही कम है, भारत को इस पर कार्य करने की आवश्यकता है।
- डॉक्टर प्रयाग सिंह ने अपनी पुस्तक, "अंतर्राष्ट्रीय संगठन" (2005) में लिखा है कि दक्षिण एशिया के देश क्षेत्रीय संयुक्त आर्थिक , सामरिक , राजनीतिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Kanchan Kumari
9/4/24

9/4/24

- डॉक्टर शैलेन्द्र सिंह की पुस्तक, ,"दक्षिण पूर्व एशिया", डॉक्टर निशा सिंह की रचना, "दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापारिक संबंध", कंबोज अनिल की रचना, "क्षेत्रीय कूटनीति : सार्क ,आसियान ,ब्रिक्स और एस. सी .ओ" , आदि विद्वानों ने इस पर कार्य किए है।

उपर्युक्त पुस्तकों मे भारत – आसियान संबंधों पर ऊपर – ऊपर का काम किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का स्वरूप परिवर्तनशील रहा है।आज इस क्षेत्र में पश्चिमी व अन्य शक्तिशाली देशों का हस्तक्षेप बढ़ा है। नव उपनिवेशवाद की स्थिति है। एक ध्रुवीय विश्व वयवस्था से अब विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर परिवर्तित हो रही है। पूर्व के अध्ययनों में इन सभी मुद्दों पर कम ध्यान दिया गया है। अतः इन सभी मुद्दों को ध्यान रखते हुए भारत -आसियान के बीच हाल के वर्षो में हुए घटनाक्रम के सन्दर्भ मे गहरी और विश्लेषणात्मक शोध की आवश्यकता है। इसलिए मेरे द्वारा इस विषय को अपने शोध कार्य के लिए चुना गया है।

कुछ महतवपूर्ण शोध आलेखों का अध्ययन –

- गिऊलिया सियोराती ने 2023 में प्रकाशित अपने आलेख "एक नोडल केंद्र : कोविड-19 के बाद आसियान के साथ भारत के संबंधों में प्रतिस्पर्धी रुचियां" में भारत आसियान के बीच दो प्रमुख हित, व्यापार और गैर पारंपरिक सुरक्षा सहयोग के विकास की जांच करता है। इसमें हित आधारित दृष्टिकोण पर फोकस किया गया है।
- कार्तिक नचियप्पन ने 2021 में प्रकाशित अपने आलेख "भारत आसियान संबंध इंडो पैसिफ़िक लहर की सवारी और पार करना" में बताया है कि रक्षा सहयोग के साथ साथ आसियान और आसियान राज्यों के साथ भारत की पहल बढ़ी है। जिसे अब भारत और आसियान राज्यों पर मतभेद के बावजूद इंडो- पैसिफ़िक रुब्रिक के तहत नवीनीकृत और पुनः बातचीत की जा रही है।
- नेहगिंनपाओ किपगेन ने 2020 में प्रकाशित अपने आलेख "भारत आसियान संबंध : पहल, सफलताएं और चुनौतियां में चार महत्वपूर्ण मुद्दों राजनीतिक, अर्थव्यवस्था ,सुरक्षा और सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर ध्यान केंद्रित करके भारत आसियान संबंधों की जांच करता है। इसमें भारत और आसियान देशों की सुरक्षा चिंताओं को समझने के लिए दक्षिण चीन सागर विवाद का भी विश्लेषण किया गया है। उनका तर्क है कि भारत आसियान संबंध भविष्य में बढ़ते रहेंगे।
- कृष्णन वी केशवन ने 2020 में प्रकाशित अपने आलेख "भारत की एक्ट ईस्ट नीति और क्षेत्रीय सहयोग" में बताया है कि भारत की एक्ट ईस्ट नीति विशाल एशिया प्रशांत क्षेत्र के साथ विभिन्न स्तरों पर आर्थिक, रणनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने की एक राजनयिक पहल है। चीन की बढ़ती आर्थिक तथा सैन्य ताकत ताकत को देखते हुए भारत ने दक्षिण पूर्वी देशों के साथ संबंधों को प्रगाढ़ करने पर ज़ोर दिया है।

Kanchan Kumari
9/4/24

9/4/24

➢ प्रीति भोगल ने 2018 में प्रकाशित अपने आलेख "भारत आसियान आर्थिक संबंध भविष्य की संभावनाओं की जांच" में बताया है कि 1990 के दशक में जैसे जैसे भारत अधिक खुली और उदार व्यापार निवेश व्यवस्था की ओर बढ़ा , अपने पूर्वी और दक्षिण पूर्व पड़ोसियों के साथ सहयोग करने में इसमें रूचि गहरी होती गई।भारत द्वारा दक्षिण पूर्व के देशों के साथ घनिष्ठ साझेदारी और विभिन्न प्रयासों की चर्चा की है।

शोध का क्षेत्र(Areas of the research) –

प्रस्तावित शोध में भारत आसियान संबंधों का बहुआयामीय अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसमें भारत आसियान के मध्य सामरिक, राजनीतिक, कूटनीतिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक आदि पक्षों का समावेश किया गया है। क्षेत्रीय सहयोग संगठन का अध्ययन भी इसमें अंतर्निहित है।इसके साथ ही भारत का आसियान से संबंधित नीति तथा विदेश नीति का भी अध्ययन इसमें शामिल होगा। आसियान भारत का विस्तारित पड़ोसी (Extended Neighbourhood)का हिस्सा है।

शोध का उद्देश्य (Objectives of the Research) –

➢ भारत - आसियान संबंधों का विश्लेषण कर संबंधों को प्रगाढ़ करना।
➢ वर्तमान समय में भारत - आसियान संबंधों में उत्पन्न चुनौतियों को पहचान कर उसका समाधान ढूंढना।
➢ पारस्परिक सहयोग व सहायता का उत्तरोत्तर विकास करना।
➢ व्यापार को बढ़ावा देना।
➢ पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा को मजबूत करना।
➢ हिंद - प्रशांत क्षेत्र में शांति बहाल करना।
➢ चीन की विस्तारवादी नीति को रोकना।

शोध का महत्त्व व योगदान (Importance and contribution of the Research)–

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दक्षिण पूर्वी एशिया क्षेत्र का सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इसी महत्त्व को देखते हुए इस विषय पर अध्ययन किया जा रहा है। प्रस्तावित शोध से राजनीति विज्ञान , अंतरराष्ट्रीय राजनीति , अर्थशास्त्र व अन्य विषयों में भी योगदान मिलेगा।

Kanchan Kumari
9/4/24

परिकल्पनाएं (Hypothesis) –

प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से निम्नलिखित परिकल्पनाओं का सत्यापन किया जाएगा –

- भारत के आर्थिक प्रगति के लिए आसियान के साथ व्यापार में वृद्धि अपरिहार्य है।
- एक्ट ईस्ट नीति के द्वारा भारत आसियान संबंधों में प्रगाढ़ता आई है।
- भारत आसियान संबंध के द्वारा चीन की विस्तारवादी नीति का प्रतिरोध किया जा रहा है।
- भारत आसियान संबंधों के द्वारा दक्षिण एशिया की सुरक्षा मजबूत हुई है।

अध्ययन पद्धति (Methodological approach) –

प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा। यह शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतो पर आधारित होगा।
इसके अंतर्गत प्रकाशित सरकारी प्रतिवेदन , पुस्तकें ,पत्र पत्रिकाएं, विषय से संबंधित मुद्रित सामग्री शोध आलेख, शोध प्रबंध आदि का भी सहारा लिया जाएगा।

कार्य योजना (Work design) –

अध्याय – I	:	भूमिका
अध्याय – II	:	" लुक ईस्ट पॉलिसी" से "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" तक
अध्याय – III	:	भारत, आसियान और चीन
अध्याय – IV	:	भारत आसियान देशों के मध्य व्यापारिक एवं सामरिक संबंध
अध्याय – V	:	चुनौतियां एवं सम्भावनाएं
अध्याय – VI	:	निष्कर्ष एवं सुझाव
	:	ग्रन्थ सूची

ग्रंथ सूची -

Kanchan Kumari
9/4/24

[signature] 9/4/24

7

प्राथमिक स्रोत (Primary source) –

- एसोचैम . इंडिया आसियान ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट रिलेशंस अपॉर्चुनिटी एंड चैलेंज, जुलाई ,2020.
- मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, ब्रीफ.
- मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया.
- एंबेसी ऑफ इंडिया , जकार्ता , इण्डिया - इंडोनेशिया इकोनॉमिक एंड कॉमर्शिल रिलेशन ,31 दिसंबर 2018.
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू . ग्लोबल सिक्योरिटी.कॉम.
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू . एमईए.जीओवी.इन, मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स .
- एक्सपोर्ट इंपोर्ट डाटा बैंक डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स .

द्वितीयक स्रोत(Secondary sources) –
पुस्तकें (books) –

- मगिलावगनम एम,(2023), "आसियान एंड इंडिया आसियान रिलेशन नेविगेटिंग शिफ्टिंग जियोपॉलिटिक्स", राउटलेज पब्लिकेशन.
- डीडी श्रीनिवास चारी और डा राधा रघुराम पत्र ऊनि ,(2022),"इंडियाज ट्रेड विथ द आसियान – ए स्टडी ऑन ट्रेंड्स, डिटरमिनेंट्स एंड अपॉर्चुनिटी",अभिजीत पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
- पांडे गिरीशचंद्र ,(2022), "भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी" वॉलनट पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
- सिंह सुधीर,"लुक ईस्ट टू एक्ट ईस्ट : ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया-आसियान रिलेशन इन मोदी एरा", पेंटागन प्रेस, नई दिल्ली.
- शर्मा तृप्ति,(2018),"इंडिया आसियान रिलेशन", रिप्रो बुक्स लिमिटेड, मुंबई महाराष्ट्र.
- डॉ. बीएल फड़ियां और डॉ कुलदीप फड़िया , (2020), "अंतरराष्ट्रीय राजनीति", साहित्य भवन, आगरा, उत्तर प्रदेश.
- सिंह अमरजीत, (2020), "नॉर्थईस्ट इंडिया एंड इंडिया एक्ट ईस्ट पॉलिसी, आइडेंटिफाइंग द प्रायोरिटीज", राउटलेज पब्लिकेशन.
- सिंह डॉ निशा,(2014), "दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापारिक संबंध",हिंदी बुक सेंटर,न्यू दिल्ली.

Kanchan Kumari
9/4/24

9/4/24

- तिवारी विश्वनाथ,(2012), "एशिया का भौगोलिक स्वरूप", आगरा.
- डॉ. परमानंद , (2008), "पॉलिटिक्स डेवलपमेंट इन साउथ एशिया", नई दिल्ली.
- पामर एवं पार्किन्स , (2000) , "इंटरनेशनल रिलेशन", इंडियन पब्लिशर्स , नई दिल्ली.
- सिंह डॉक्टर प्रयाग, (2005), "अंतर्राष्ट्रीय संगठन" , नई दिल्ली.
- कुमार प्रदीप, "भारत आसियान उभरता रुझान 1990 के दशक में"
- डॉ. बीएल फड़िया, (1998), "भारत एवं आधुनिक विश्व",साहित्य भवन, आगरा.
- चौधरी जे सी, "अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा राजनीति".

शोध आलेख (Articles) –

- सियोराती, जी. (2023)। एक 'नोडल केंद्र': कोविड-19 के बाद आसियान के साथ भारत के संबंधों में प्रतिस्पर्धी रुचियां। भारत की विदेश नीति और आर्थिक चुनौतियाँ: मित्र, शत्रु और विवाद (पृ. 213-231) में। चाम: स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।
- नथिअप्पन, के. (2021)। भारत-आसियान संबंध: "इंडो-पैसिफिक" लहर की सवारी और पार करना। द जर्नल ऑफ़ इंडियन एंड एशियन स्टडीज़, 2(02), 2140004।
- किपगेन, एन. (2020)। भारत-आसियान संबंध: पहल, सफलताएँ और चुनौतियाँ। इंडिया रिव्यू, 19(3), 207-222
- केसवन, के.वी. (2020)। भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और क्षेत्रीय सहयोग। भारत और दक्षिण कोरिया: नए रास्ते तलाशना, लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार करना, 7.
- अली, के. मोदी की एक्ट ईस्ट नीति और आसियान की केंद्रीयता।
- भोगल, पी. (2018)। भारत-आसियान आर्थिक संबंध: भविष्य की संभावनाओं की जांच। ओआरएफ अंक संक्षिप्त, 221, 1-8.

समाचारपत्र Newspaper –

- द हिंदू
- हिंदुस्तान
- टाइम्स ऑफ इंडिया .

Kanchan Kumari
9/4/24

- इंडियन एक्सप्रेस
- दैनिक जागरण आदि

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

Kanchan Kumari
9/4/24
शोधार्थी का हस्ताक्षर

M. Kumari 20.4.24

20/4/24

MBVerma 20.04.2024

20.04.24.

Head
University Department of Political Science
Lalit Naray Mithila University, Darbhanga